IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों की शैक्षिक वंचना: हरदोई जनपद में बाल श्रम, विद्यालय पहुँच, स्वास्थ्य एवं पोषण का क्षेत्रीय अध्ययन

राम उग्र
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्रा विभाग,
सी. एस. एन. पी. जी. कॉलेज, हरदोई, उत्तर प्रदेश

सारांश

यह अध्ययन हरदोई जनपद के ईंट-भट्ठों पर कार्यरत श्रमिक परिवारों के बच्चों की शैक्षिक स्थिति को बाल श्रम, विद्यालय तक पहुँच, प्रवासन, स्वास्थ्य तथा पोषण की परस्पर जुड़ी परिस्थितियों के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है। अध्ययन के लिए 10 ब्लॉकों के 30 ईंट-भट्ठों को शामिल किया गया |तथा 6–14 वर्ष आयु वर्ग के 300 बच्चों—160 बालक और 140 बालिकाओं—से संबंधित प्राथमिक जानकारी संकलित की गई। इसके अतिरिक्त 70 श्रमिक अभिभावकों को भी अध्ययन में शामिल किया गया। उपलब्ध क्षेत्रीय आँकड़े संकेत करते हैं कि बच्चों की विद्यालयी सहभागिता निरंतर नहीं है; अनेक बच्चे कभी-कभी विद्यालय जाते हैं या केवल उस अवधि में विद्यालय पहुँच पाते हैं जब परिवार गाँव में रहता है। अध्ययन में यह भी सामने आया कि भट्ठे के कार्य में बच्चों की सहभागिता, विद्यालय से भौगोलिक दूरी, परिवार का मौसमी प्रवासन, आर्थिक दबाव, अपर्याप्त पोषण तथा स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयाँ एक-दूसरे से जुड़कर शैक्षिक अवसरों को सीमित करती हैं। अध्ययन का केंद्रीय निष्कर्ष यह है कि ईंट-भट्ठा श्रमिक बच्चों की शैक्षिक वंचना को केवल विद्यालय की उपलब्धता के प्रश्न के रूप में नहीं देखा जा सकता; यह बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक वंचना की प्रक्रिया है।

प्रमुख शब्द: बाल श्रम, ईंट-भट्ठा श्रमिक, शैक्षिक वंचना, विद्यालय पहुँच, प्रवासन, बाल्यावस्था, स्वास्थ्य, पोषण।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-38878

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

प्रस्तावना

बाल्यावस्था मानव जीवन की ऐसी अवस्था है जिसमें शारीरिक वृद्धि के साथ-साथ भाषा, संज्ञान, सामाजिकता, भावनात्मक विकास और सीखने की आधारभूत क्षमताएँ विकसित होती हैं। इसलिए शिक्षा से जुड़ाव केवल विद्यालय जाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भविष्य के अवसरों और सामाजिक सहभागिता से भी जुड़ा हुआ है। ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों के संदर्भ में यह प्रश्न अधिक जटिल हो जाता है, क्योंकि उनके जीवन में शिक्षा के साथ जीविका, प्रवासन और श्रम की आवश्यकताएँ भी जुड़ी होती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के क्षेत्रीय विवरण में ईंट-भट्ठों पर रहने वाले परिवारों की ऐसी परिस्थितियाँ दर्ज की गई हैं जिनमें बच्चे अपने माता-पिता के साथ रहते हुए कार्य में भाग लेते हैं। मिट्टी गूँथने, ईंट बनाने, ईंटों का चट्टा लगाने, ईंट ढोने और अन्य सहायक कार्यों में बच्चों की भागीदारी दर्ज हुई। इस प्रकार बाल्यावस्था का समय सीखने और खेलने के बजाय पारिवारिक श्रम में व्यतीत होने लगता है। अध्ययन में यह भी देखा गया कि कुछ भट्ठे विद्यालयों और आंगनबाड़ी केंद्रों से दूर हैं, जिससे बच्चों को नियमित शैक्षिक सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है।

इस अध्ययन की विशेषता यह है कि बाल श्रम और शिक्षा के संबंध को एक ही कारण से नहीं समझा गया है। आर्थिक स्थिति, परिवार का ऋण, मौसमी प्रवासन, कार्य की प्रकृति, विद्यालय की दूरी, स्वास्थ्य तथा भोजन की उपलब्धता—इन सभी को बच्चों की शैक्षिक भागीदारी से जोड़कर देखा गया है। इस दृष्टिकोण से अध्ययन ईंट-भट्ठा श्रमिक बच्चों की शैक्षिक वंचना को एक बहुस्तरीय सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

अध्ययन की समस्या

ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा की समस्या केवल इस बात से निर्धारित नहीं होती कि विद्यालय मौजूद है या नहीं। यदि परिवार मौसमी रूप से स्थान बदलता है, यदि बच्चा परिवार की आय में योगदान देने के लिए काम करता है, यदि भट्ठा विद्यालय से दूर है अथवा स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति कमजोर है, तो विद्यालय की औपचारिक उपलब्धता के बावजूद वास्तविक शैक्षिक पहुँच सीमित रह सकती है। उपलब्ध अध्ययन-सामग्री में सामान्यतः बाल श्रम, शिक्षा और श्रमिक परिवारों की कठिनाइयों पर चर्चा मिलती है, जबकि प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन हरदोई जनपद के ईंट-भट्ठा संदर्भ में इन कारकों को प्रत्यक्ष

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

प्राथमिक आँकड़ों के साथ जोड़ता है। विशेष रूप से विद्यालयी उपस्थिति के विभिन्न रूपों और भट्ठे पर बच्चों की कार्य-भागीदारी को साथ पढ़ना इस अध्ययन को एक विशिष्ट क्षेत्रीय दृष्टिकोण प्रदान करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

हरदोई जनपद के ईंट-भट्ठों पर कार्यरत बाल श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करना।

ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों की विद्यालय तक पहुँच और विद्यालयी उपस्थिति का विश्लेषण करना।

बाल श्रम, पारिवारिक आर्थिक परिस्थितियों, प्रवासन तथा बच्चों की शिक्षा के बीच संबंधों को समझना।

बाल श्रमिक बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण की परिस्थितियों तथा उनके शैक्षिक अवसरों के बीच संबंध को समझना।

शोध प्रश्न

ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति क्या है?

बाल श्रम और पारिवारिक श्रम-निर्भरता बच्चों की विद्यालयी सहभागिता को किस प्रकार प्रभावित करती है?

प्रवासन तथा विद्यालय से दूरी बच्चों की शैक्षिक निरंतरता में किस प्रकार बाधा बनते हैं?

स्वास्थ्य, पोषण और कार्य-परिस्थितियाँ बच्चों के शैक्षिक अवसरों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

शोध-विधि

अध्ययन का स्वरूप वर्णनात्मक एवं क्षेत्रीय है और इसमें प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया। अध्ययन क्षेत्र के रूप में हरदोई जनपद के ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों को चुना गया। उपलब्ध अध्ययन-सामग्री के अनुसार 11 ब्लॉकों के 32 ईंट-भट्ठों को अध्ययन में शामिल किया गया। 6–14 वर्ष आयु वर्ग के कुल 301 बच्चों में 167 बालक और 134 बालिकाएँ थीं। साथ ही 64 श्रमिक अभिभावकों/श्रमिकों से भी जानकारी ली गई, जिनमें 35 पुरुष और 29 महिलाएँ थीं।

प्राथमिक आँकड़े क्षेत्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त किए गए। द्वितीयक सामग्री में पुस्तकों, शोध-पत्रों, रिपोर्टों, समाचार-पत्रों और उपलब्ध साहित्य का उपयोग किया गया। विश्लेषण में वर्णनात्मक आँकड़ों तथा क्षेत्रीय अवलोकनों को विषयगत रूप से व्यवस्थित किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

अध्ययन क्षेत्र और उत्तरदाताओं की रूपरेखा

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
बालक	160	53.33
बालिकाएँ	140	46.67
कुल	300	100

अध्ययन का नमूना ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों की पर्याप्त क्षेत्रीय विविधता को दर्शाता है। अध्ययन सामग्री में यह भी उल्लेख है कि भट्ठों पर अन्य जिलों से आए परिवार अपने बच्चों सहित रहते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में प्रवासन और श्रम की गतिशीलता शिक्षा की निरंतरता को समझने के लिए महत्वपूर्ण संदर्भ है।

परिणाम एवं विश्लेषण

बच्चों की कार्य-भागीदारी

क्षेत्रीय सर्वेक्षण में बच्चों की कार्य-भागीदारी के विभिन्न रूप सामने आए। 332 कार्य-भागीदारी प्रविष्टियों में ईंट बनाना 102 (43.98%), ईंटों का चट्टा लगाना 65 (28.01%), मिट्टी ढोना 25 (10.77%), ईंट ढोना 15 (6.46%), मिट्टी से संबंधित कार्य 5 (2.15%) तथा अन्य कार्य भी दर्ज हुए। कुछ बच्चों द्वारा एक से अधिक कार्य किए जाने के कारण कार्य-प्रविष्टियों का कुल योग बच्चों की संख्या से अधिक है।

इन आँकड़ों का महत्व केवल इस तथ्य में नहीं है कि बच्चे काम करते हैं, बल्कि इस बात में है कि उनका श्रम परिवार की उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है। जब पारिवारिक आय कार्य की मात्रा और ईंटों के उत्पादन से जुड़ी होती है, तब बच्चे भी उत्पादन-चक्र में सम्मिलित हो जाते हैं। इससे उनके लिए शिक्षा हेतु नियमित समय निकालना कठिन होता है।

विद्यालय तक पहुँच और उपस्थिति

अध्ययन में 300 बच्चों की विद्यालयी उपस्थिति को अलग-अलग श्रेणियों में देखा गया। 85 बच्चे कभी विद्यालय जाने वाले, 62 कभी-कभी विद्यालय जाने वाले, 125 गाँव में रहने की अवधि के दौरान विद्यालय जाने वाले तथा 28 लगातार विद्यालय जाने वाले पाए गए। इन आँकड़ों से एक महत्वपूर्ण पैटर्न सामने आता है—

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

शिक्षा से वंचना हमेशा पूर्ण विद्यालय-बहिष्करण के रूप में नहीं होती, बल्कि अनियमित और मौसमी उपस्थिति के रूप में भी दिखाई देती है।

इसी आधार पर इस अध्ययन में 'मौसमी शैक्षिक वंचना' की अवधारणा उपयोगी प्रतीत होती है। जब परिवार गाँव से भट्ठे की ओर जाता है तो बच्चे विद्यालय से कट जाते हैं और गाँव लौटने पर फिर विद्यालय से जुड़ते हैं। ऐसी टूटती हुई शैक्षिक निरंतरता सीखने की गति, कक्षा-स्तर की प्रगति और विद्यालय से भावनात्मक जुड़ाव को प्रभावित कर सकती है।

शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता

अध्ययन में उपलब्ध शैक्षिक सामग्री से संबंधित उत्तरों में 215 बच्चों ने सामग्री उपलब्ध न होने की स्थिति बताई, जबकि 57 बच्चों के संबंध में सामग्री उपलब्ध होने की सूचना दर्ज है। यह अंतर बताता है कि विद्यालय में नामांकन या किसी समय विद्यालय जाना अपने आप में पर्याप्त शैक्षिक अवसर की गारंटी नहीं है। सीखने के लिए पुस्तक, लेखन सामग्री, नियमित शिक्षक-संपर्क और स्थिर विद्यालयी वातावरण भी आवश्यक हैं।

विद्यालय से दूरी और भौगोलिक बाधाएँ

क्षेत्रीय अवलोकन में ऐसे भट्ठों का उल्लेख है जहाँ आसपास विद्यालय नहीं था। कुछ स्थानों पर नाले, रेलवे पटरी और राजमार्ग जैसी भौगोलिक बाधाएँ भी बच्चों की आवाजाही को कठिन बनाती हैं। कुछ भट्ठों के पास विद्यालय या गाँव होने पर बच्चों के लिए विद्यालय पहुँचना अपेक्षाकृत आसान पाया गया। इस प्रकार भौगोलिक दूरी स्वयं में एक बाधा है, परंतु उसका प्रभाव परिवार की प्रवासी स्थिति और परिवहन की उपलब्धता के साथ बढ़ जाता है।

स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति

अध्ययन के क्षेत्रीय अवलोकनों में अपर्याप्त भोजन, स्वच्छ पेयजल, स्नान एवं व्यक्तिगत स्वच्छता की कमी तथा श्वसन संबंधी कठिनाइयों का उल्लेख मिलता है। भट्ठे के वातावरण में धूल और धुएँ के संपर्क को भी स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल बताया गया है। ऐसी परिस्थितियों में बच्चों का शारीरिक स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है और बीमारी के कारण विद्यालयी सहभागिता बाधित हो सकती है।

पोषण की समस्या शिक्षा से अलग कोई स्वतंत्र समस्या नहीं है। यदि बच्चे को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता, यदि परिवार की आय भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित नहीं कर पाती और यदि कार्य-परिस्थितियाँ स्वास्थ्य पर

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

अतिरिक्त दबाव डालती हैं, तो बच्चे की सीखने की क्षमता और विद्यालय में नियमित भागीदारी दोनों प्रभावित हो सकती हैं।

आर्थिक दबाव, ऋण और बाल श्रम

अध्ययन में कुछ श्रमिक परिवारों के स्थानीय ठेकेदारों से ऋण लेने और उसे ब्याज सहित चुकाने की परिस्थितियों का उल्लेख है। इस प्रकार ऋण और श्रम का संबंध केवल वर्तमान आय तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार के श्रम-संसाधन को लंबे समय तक बाँध सकता है। जब माता-पिता के साथ बच्चे भी उत्पादन कार्य में लगते हैं, तो शिक्षा का अवसर-लागत परिवार के लिए बढ़ जाता है।

इसे एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है: आर्थिक अभाव से ऋण की आवश्यकता बढ़ती है; ऋण श्रम-निर्भरता को बढ़ाता है; श्रम में बच्चों की भागीदारी शिक्षा के समय को कम करती है; शिक्षा की निरंतरता टूटने से भविष्य के शैक्षिक अवसर सीमित होते हैं। इस प्रकार वर्तमान आर्थिक दबाव भविष्य की शैक्षिक संभावनाओं पर प्रभाव डाल सकता है।

चर्चा

अध्ययन से प्राप्त परिणाम बताते हैं कि ईंट-भट्ठा श्रमिक बच्चों की शिक्षा को केवल 'विद्यालय में प्रवेश' के प्रश्न के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। यहाँ शिक्षा की वास्तविक पहुँच बहुआयामी है। बच्चे विद्यालय जाना चाहते हों, फिर भी परिवार का प्रवासन, काम की आवश्यकता, भट्ठे से विद्यालय की दूरी, परिवहन की कठिनाई और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उनकी नियमित उपस्थिति को बाधित कर सकती हैं।

अध्ययन की एक महत्वपूर्ण व्याख्या यह है कि बाल श्रम और शैक्षिक वंचना एक-दूसरे को मजबूत करने वाली प्रक्रियाएँ बन सकते हैं। बच्चा जितना अधिक पारिवारिक उत्पादन में शामिल होता है, उसके पास पढ़ने और विद्यालय जाने के लिए उतना ही कम समय बचता है। दूसरी ओर, विद्यालय से कमजोर जुड़ाव परिवार के लिए बच्चे को काम में लगाए रखना आसान बना सकता है। इस प्रकार शिक्षा और श्रम के बीच संबंध को द्विदिश सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझना उपयोगी है।

इसी प्रकार स्वास्थ्य और पोषण को शिक्षा से जोड़कर देखना आवश्यक है। भट्ठे का कार्य-परिवेश, धूल-धुआँ, अपर्याप्त भोजन और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच बच्चों के विकास पर दबाव डालते हैं। इसलिए केवल

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

नामांकन बढ़ाने की नीति पर्याप्त नहीं होगी; शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक सुरक्षा को एक साथ जोड़ने वाली व्यवस्था अधिक उपयुक्त होगी।

वैचारिक रूपरेखा

अध्ययन के निष्कर्षों को निम्न अंतर्संबंधित प्रक्रिया के माध्यम से समझा जा सकता है:

आर्थिक अभाव → ऋण/आय की अस्थिरता → ईंट-भट्ठा प्रवासन → बाल श्रम → विद्यालयी अनियमितता → शैक्षिक वंचना

भट्ठे का कार्य-परिवेश → धूल/धुआँ + अपर्याप्त पोषण + स्वास्थ्य समस्याएँ → विकास पर प्रभाव → विद्यालयी सहभागिता में बाधा

निष्कर्ष

हरदोई जनपद के चयनित ईंट-भट्ठों से प्राप्त क्षेत्रीय आँकड़े यह संकेत करते हैं कि श्रमिक परिवारों के बच्चों के लिए शिक्षा का प्रश्न बहुआयामी है। बाल श्रम, मौसमी प्रवासन, विद्यालय से दूरी, आर्थिक दबाव, स्वास्थ्य और पोषण की परिस्थितियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। बच्चों की विद्यालयी स्थिति में निरंतरता का अभाव इस समस्या का प्रमुख संकेतक है।

अध्ययन में बच्चों की कार्य-भागीदारी और विद्यालयी उपस्थिति के बीच स्पष्ट व्यावहारिक तनाव दिखाई देता है। जो बच्चे परिवार के साथ उत्पादन कार्य में लगे हैं, उनके लिए नियमित विद्यालयी जीवन बनाए रखना कठिन है। साथ ही, भट्ठे और विद्यालय के बीच दूरी तथा प्रवासन की अवधि इस कठिनाई को और बढ़ाती है।

अतः ईंट-भट्ठा श्रमिक बच्चों की शिक्षा को केवल नामांकन या विद्यालय की संख्या से मापने के बजाय वास्तविक पहुँच, निरंतर उपस्थिति, सीखने की सामग्री, स्वास्थ्य, पोषण और सुरक्षित बाल्यावस्था के संयुक्त संकेतकों से समझना अधिक उपयुक्त होगा।

सुझाव एवं नीतिगत निहितार्थ

ईंट-भट्ठों पर पाए जाने वाले बच्चों की नियमित पहचान कर उन्हें निकटतम विद्यालय से जोड़ने तथा प्रवासन की स्थिति में शैक्षिक निरंतरता बनाए रखने की व्यवस्था विकसित की जाए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

भट्ठों के आसपास विद्यालय या वैकल्पिक शैक्षिक सहायता उपलब्ध कराने के लिए शिक्षा विभाग और स्थानीय प्रशासन के बीच समन्वय बढ़ाया जाए।

ईंट-भट्ठा श्रमिक परिवारों के बच्चों के लिए स्वास्थ्य परीक्षण, पोषण और स्वच्छ पेयजल की नियमित व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

बाल श्रम की पहचान और रोकथाम के लिए श्रम विभाग तथा स्थानीय प्रशासन द्वारा नियमित निरीक्षण और कानून के प्रभावी क्रियान्वयन की व्यवस्था हो।

ऋणग्रस्त और अत्यधिक आर्थिक दबाव वाले परिवारों को उपलब्ध सामाजिक सुरक्षा एवं कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने की विशेष व्यवस्था की जाए।

प्रवासी श्रमिक परिवारों के बच्चों के लिए ऐसी शैक्षिक व्यवस्था विकसित की जाए जिसमें स्थान परिवर्तन के कारण उनकी पढ़ाई पूरी तरह न टूटे।

अध्ययन की सीमाएँ

यह अध्ययन चयनित 11 ब्लॉकों और 32 ईंट-भट्ठों से प्राप्त प्राथमिक जानकारी पर आधारित है; इसलिए इसके निष्कर्षों को हरदोई जनपद के सभी बच्चों या भारत के सभी ईंट-भट्ठों पर सीधे सामान्यीकृत नहीं किया जाना चाहिए। उपलब्ध सामग्री में कुछ आँकड़े क्षेत्रीय अवलोकन तथा उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं पर आधारित हैं। आगे के शोध में बड़े नमूने, अनुदैर्ध्य अध्ययन और बच्चों की सीखने की उपलब्धियों को शामिल करके इस विषय को और विस्तार दिया जा सकता है।

संदर्भ

[1] आचार्य, एस. एवं सेन, ए. (2008). सामुदायिक सहभागिता और बाल श्रम रोकथाम रणनीतियाँ. Journal of Social Education, 12(3), 45–59. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[2] अहमद, ए. एवं झा, आर. (2021). दक्षिण एशिया के ईंट-भट्ठों में शिक्षा के माध्यम से लड़कियों को सशक्त बनाना. UNICEF. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[3] भाटिया, पी. एवं राम, एस. (2021). शिक्षा और बाल श्रम: गरीबी और काम का अंतर्संबंध. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[4] दास, पी. एवं रॉय, एस. (2021). ग्रामीण ईंट-भट्ठा क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाएँ और साक्षरता. Journal of Rural Education, 28(3), 210–225. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

[5] देसाई, आर. (2019). शैक्षिक प्रदर्शन पर बाल श्रम का प्रभाव: ईंट-भट्ठों का एक अध्ययन. बाल विकास अनुसंधान, 15(2), 134–150. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[6] कुमार, एस., जैन, आर. एवं शर्मा, वी. (2022). बाल श्रमिकों की शिक्षा में बाधाएँ: उत्तरी भारत में ईंट-भट्ठा परिवार. बाल शिक्षा समीक्षा, 12(1), 79–105. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[7] नायर, एस. (2021). ईंट-भट्ठा मजदूर परिवार में सांस्कृतिक मानदंड और शैक्षिक प्राथमिकताएँ. सांस्कृतिक शिक्षा का समाजशास्त्र, 19(2), 145–160. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)।

[8] अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन. ईंट-भट्ठों में काम करने वाले बच्चों का मनोसामाजिक स्वास्थ्य: एक वर्गीकरण वृक्ष विश्लेषण. (स्रोत दस्तावेज में प्रदत्त संदर्भ के आधार पर)